ई–बुलेटिन

# कृषिउद्यमी

MANAGE

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड VII अंक IV

जुलाई, 2015

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:


- आईसीएआर के स्थापना दिवस पर कृषिउद्यमी सम्मानित
- इस माह के कृषि उद्यमी : श्री. विकास कुमार, हरयाणा
- कृषि विज्ञान केंद्र, बाभलेश्वर, महाराष्ट्र द्वारा बनाया गया "कृषि उद्यमियों" का समूह
- डीएसी ई-बुल्लेटिन
- कृषक महिलाओं के लिए अनुकूल हैंडबुक


**कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें**

**1800 –425-1556**

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

## आईसीएआर के स्थापना दिवस पर कृषिउद्यमी सम्मानित

एसके मेमोरियल हाल, पटना में 25 जुलाई 2015 को आयोजित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के 87 वें स्थापना दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने श्री विमल किशोर, एक कृषि उद्यमी को सम्मानित किया। प्रधानमंत्री ने आईसीएआर को पटना, बिहार जहां बहुत पहले 1905 में देश में पहली बार कृषि अनुसंधान संस्थान की स्थापना द्वारा कृषि अनुसंधान शुरू किया गया, वहाँ अपना स्थापना दिवस मनाने की पहल की प्रशंसा की।

कौशल विकास कार्यक्रमों के कार्यान्वयन को सदृढ़ बनाने के लिए इस कार्यशाला का संचालन

प्रयोगशाला से भूमि की पहल पर ज़ोर देते हुये, उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों को कृषि प्रौद्योगिकी के विकास और सुधार में कृषकों को अपना सहयात्री बनाने पर ज़ोर दिया। वैज्ञानिकों की टीम द्वारा गाँवों के अभिग्रहण से कृषकों के जीवन में उत्पादकता की वृद्धि के कारण महत्वपूर्ण बदलाव आ सकते हैं। सर्वश्रेष्ट कृषक की श्रेणी में श्री. विमल किशोर, समस्तीपुर, बिहार के एक कृषक -सह-कृषिउद्यमी ने नकद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र का पुरस्कार जीता। श्री. विमल किशोर ने 200 से अधिक मछुआरों को शामिल करके "सोनमार चौर मत्स्य विकास समिति, सहजदपुर" नामक एक सहकारी समिति पंजीकृत करी है और 70 एकड़ की भूमि पर सहकारी आधारित एकीकृत मत्स्य कृषि क्रियाकलाप सफलतापूर्वक स्थापित किया। उन्होंने देशी छोटी मछलियों की उपलब्धता के लिए मछली पालनघर भी तैयार किया है।

उनकी परियोजना को नोडल परियोजना के रूप में पहचान प्राप्त हुई है और आईसीएआर द्वारा भी इसे सहयोग प्राप्त हो रहा है। श्री. विमल किशोर से इस पते पर संपर्क किया जा सकता है: मेसर्स मुस्कान ऐग्री-क्लीनिक, ग्राम-शहजादपुर, पोस्ट-रामचंदरपूर, जिला-समस्तीपुर, मोबाइल सं.09430242544.

# धान किसानों को समृद्ध बनाने के लिए बतख की खेती

विकास कुमार (27) कर्नल ग्राम के एक युवा का कहना है कि, "बतख पालन के लिए मुर्गी पालन जैसी घर की सुविधा की आवश्यकता नहीं है। बतख मुर्गी की तुलना में अधिक बलशाली, भारतीय जलवायु में अधिक उपयुक्त और ज़्यादा रोग-प्रतिरोधक क्षमता वाले होते है"। आरंभ में, जैसा कि हमेशा होता है, उन्हें कई कारणों के चलते बतख खेती से आय कमाने में बहुत मेहनत करनी पड़ी। आज वें इंडियन रन्नर और ख़ाकी कैम्पबेल प्रजाति जो उच्च स्तर की समझी जाती है के 2000 बतखों का पालन कर रहे है। विकास कुमार का कहना है कि, "पशुओं का पालन-पोषण मेरी रुचि थी और जब में विद्यार्थी था तब भी मैंने मुर्गियों और बतखों के झुंड पाले थे। शिक्षा के बाद मैं पूरी तरह से खेती में जुड़ गया और साथ ही अन्य अवसरों की तलाश भी कर रहा था। यही वह समय था जब मैंने इंडियन सोसाइटी ऑफ ऐग्रीबिज़नस (आईएसएपी), कर्नल, हरयाणा का एसी और एबीसी योजना में अभ्यर्थियों के दाखिले के आमंत्रण के संदर्भ में विज्ञापन देखा। मैंने इसमे आवेदन दिया और आरंभिक इंटरव्यू और स्क्रीनिंग के पश्चात, मैं प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए चुन लिया गया। स्थानीय पशु कृषि उपक्रम पर एक व्याख्यान, जहां एक विशेषज्ञ ने मुर्गीपालन और बतख कृषि की तुलना की थी, उसने मुझे बतख कृषि को चुनने के लिए प्रोत्साहित किया। बतख खेती के लिए आवशयक सभी तकनीकी और बाज़ार का विवरण इकट्ठा करने के पश्चात, मैंने एक व्यावसायिक बतख खेती उपक्रम शुरू करने का निश्चय किया"। केवल तीन एकड़ ज़मीन होने के कारण, पहले श्री. विकास कुमार ने अपने खेत में धान की फसल और सब्जियाँ के मिश्रण की खेती करी थी। जहां 2 एकड़ में धान उगाया था वही 1 एकड़ में विभिन्न सब्जियाँ उगाई थी। प्रशिक्षण कार्यक्रम के पश्चात, सब्जियाँ उगाने के बदले उन्होंने बतख की खेती आरंभ की। बतखों को पीने के लिए और नहाने के लिए स्वच्छ पानी मोहिया करवाने के लिए उन्होंने रु.2 लाख के निवेश से कम लागत का एक बाड़ा खड़ा किया, तालाब बनाया और लोहे के तार से उसका घेराव कर दिया। हर तीन दिन के पश्चात, पूरा पानी जिसमे बीट जमा होती थी उसे धान के खेत में छोड़ दिया जाता और तालाब को फिर स्वच्छ पानी से भरा जाता। इस तरह, उन्होंने न केवल बतखों को स्वस्थ रखा बल्कि धान के खेत में भी आवश्यक जैव खाद पहुंचाया। धान और बतख की एकीकृत खेती से श्री. विकास को अच्छे परिणाम प्राप्त हुये।

बतख दानों द्वारा अपनी खुराक पूरी करते है। वे धान के खेतों में गिरे हुये बीज, कीड़े, केंचुए, छोटी मछलियाँ आदि खाते हैं। बतखों की पोषण संबंधी आवशयकताओं को ध्यान में रखते हुये, श्री. कुमार ने उनकी रोजाना खुराक में उच्च-प्रोटीन डाइट को मिला दिया जो उन्हें तेज़ी से बढ़ने में मदद करती है। चूज़ेघर से **अनुर्वर अंडे** लाकर बतखों को खाने के लिए दिये जाते थे, जो उन्हें लगा उनकी तेज़ी से बढ़ने में मदद करता था। समय पर टीकाकरण, कृमि नाशन और नियमित पशु दवाएँ सभी का प्रबंध खेत में अच्छे से किया जाता है। विकास का कहना है कि, "स्वस्थ बतखों का पालन करने का सबसे अच्छा तरीका है कि उन्हें ज्यादा-से-ज्यादा पानी, जगह, अच्छा पोषण और नियमित पशुचिकित्सा सेवा प्रदान करना"।

श्री. विकास कुमार, कृषि उद्यमी

श्री.सुशील कुमार (26), कर्नल के गल्ली मूलतन ग्राम के निवासी बतख पालन में संलग्न है। उनका कहना है कि, "यह मेरा विकास के बतख के खेत का दौरा था जिसने न केवल मुझे मोहित किया बल्कि बतख खेती करने के लिए भी प्रत्साहित किया। मैंने उसके खेत में तीन दिन बिताए, बतख खेती सीखी। मैंने उसके खेत से दो-माह के बतख के बच्चे खरीदे और उन्हें संतुलित आहार प्रदान किया और उनका अच्छे से पालन किया। चार महीनों के पश्चात, मेरे बतखों ने अंडे देने प्रारम्भ किए जिसने मुझे बहुत खुश किया। मैं अपने उद्यम को बढ़ाने के विषय में भी विचार कर रहा हूँ।

उनके अनुभव के आधार पर उनका कहना है कि, "बतख गर्मी के महीने से ज़्यादा शीतकाल के महीने में अधिक अंडे देते है, अतः में उनका आकार मौसम के आधार पर नियंत्रित रखता हूँ। शीतकाल में अधिक प्रजनन के लिए मैं नर बतख-मादा बतख का दर 1:10 रखता हूँ। वर्तमान में, प्रतिदिन 1000 अंडे प्राप्त होते है और बिक्री होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में एक अंडे की कीमत रु.6-7/- होती है जबकि शहरों में इनकी कीमत बढ़कर रु.16/- प्रति अंडा हो जाती है। अब तक 12 ग्रामों के कुल 200 कृषकों ने मेरे खेत का दौरा किया है और सुझाव लिया है। इसके अलावा, कृषक 2-3 महीने के बतख के बच्चे भी खरीदते है और अपना बतख पालन एकक शुरू करते है"। वें गर्व के साथ यह भी कहते है कि, "मैंने बतख खेती की पद्धतियों के पैकेज पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण मॉड्यूल भी तैयार किया है, और साथ ही मेरे गाँव से 6 युवाओं को भी रोजगार प्रदान किया है"।

**श्री.विकास कुमार**
पुत्र. स्वर्गीय श्री. ब्रह्म पाल, मोहिउड़ींपुर ग्राम, पोस्ट कर्नल तेह, कर्नल-132001, हरयाणा,फोन: 09813282621, 09416847609

**डॉ. भास्कर गायकवाड**
**नोडल अधिकारी**

**एनटीआई का नाम:** कृषि विज्ञान केंद्र (पीआईआरईएनएस)

**पता:** बाभलेश्वर, रहाता -413 737, अहमदनगर, महाराष्ट्र, 02422-252414, 253612, 253008 (O) 02422 –253536 (F),
ई-मेल आईडी: gaik-wadbh@yahoo.com kvkahmedna-gar@yahoo.com,

**मोबाइल:** 09822519260

**प्रशिक्षण कार्यक्रम की संख्या:** 20

**प्रशिक्षित अभयार्थियों की संख्या:** 559

**स्थापित वेंचरों की संख्या:** 299

**सफलता दर:** 53.48%

**स्थापित ऐग्रीवेंचर:**
कृषि निवेश, बीज अभिसंस्कारण, मधुमक्खी पालन, कस्टम हाइरिंग, डेयरी, कुक्कड पालन, नर्सरी, सूक्ष्म पोशाक तत्वों का उत्पादन, जैविक कृषि, खाद्य प्रसंस्करण, तेल निष्कर्षण एकक, कृषि परामर्श, पशु आहार उत्पादक एकक, रेशम उत्पादन, रंगशाला, आदि।

## । कृषि विज्ञान केंद्र, बाभलेश्वर, महाराष्ट्र द्वारा 'कृषि उद्यमी' का संघ

वर्ष 2004 से कृषि विज्ञान केंद्र, बाभलेश्वर, महाराष्ट्र एग्री-क्लीनिक्स और ऐग्री-बिज़नस केंद्र (एसी और एबीसी) योजना के कार्यान्वयन के लिए मैनज का सहभागीदार है। अब तक कुल 20 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके है और 559 अभ्यर्थियों को प्रशिक्षित किया गया है। इस योजना के अंतर्गत, केवीके का उद्देश्य है कृषिउद्यमियों को बढ़ावा देना जो उसके बदले में ग्रामीण युवाओं को रोजगार प्रदान कर सके और कृषक समुदाय के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए ज्ञान, इनपुट और सेवाएँ प्रदान करने में केवीके के बढ़ते हाथ के रूप में कार्य कर सके।
नियोजनीय कौशल के विस्तार से हज़ारों कृषक प्रशिक्षित किए गए है और 53.48 प्रतिशत से ज़्यादा प्रशिक्षुओं ने अपना उद्यम भी आरंभ किया है। हालांकि, प्रशिक्षण और उद्यम शुरू करने के पश्चात ऐग्री-वैंचर से संबन्धित केवीके कृषिउद्यमियों से संपर्क बहुत कम रहता है। कई बार, छोटी सी परेशानी या मुद्दे के कारण ये कृषिउद्यमी अपना उद्यम बीच में ही बंद कर देते है। मुद्दों, चुनौतियों और चिंताओं को साझा करने के लिए एक मंच तैयार करने की आवश्यकता के मद्देनजर, कृषि विज्ञान केंद्र, बाभलेश्वर कृषिउद्यमी संघ का निर्माण कृषक समुदाय में स्व-रोजगार अवसर और विस्तारण सेवाएँ प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया है।

### कृषिउद्यमी संघ का उद्देश्य

- केवीके बाभलेश्वर द्वारा विकसित विभिन्न कृषिउद्यमियों के बीच अंतर एवं अन्तः कृषि आधारित संपर्क विकसित करना
- विभिन्न कृषिउद्यमियों के समूह बनाना और इन समूहों में नियमित रूप से बातचीत करवाना
- वर्तमान ज्ञान के अद्यतन के लिए पुनश्चर्या प्रशिक्षण आयोजित करवाना
- उधार, विपणन, गुणवत्ता, प्रबंधन, लाइसेंसिंग, आदि से संबन्धित समस्याओं के समाधान के लिए एक प्रणाली विकसित करना
- इस नेटवर्क को सुदृढ़ बनाने के लिए विभिन्न आईसीटी उपकरणों का प्रयोग करना
- ग्रामीण युवाओं को एग्रो-आधारित उद्यमों की ओर प्रोत्साहित करना ताकि वे स्व-नियोजित बन सके।

**कार्यशाला में अपने उत्पाद बताते हुये कृषि उद्यमी।**

संघ को सुदृढ़ करते हुये, अब तक, एसी और एबीसी योजना के अंतर्गत सुस्थापित 299 कृषिउद्यमी महाराष्ट्र राज्य के साथ संपर्क में है। केवीके परिसर में नियमित मासिक बैठक और एक वार्षिक कार्यशाला आयोजित की जाती है जहां कृषिउद्यमी एक-दूसरे से सीखने के लिए और नए समाधानों को तैयार करने और साझेदारी बनाने के लिए अपनी सफलताओं, चुनौतियाँ और नवनिर्माण को साझा करते है।

## डीएसी ई-बुल्लेटिन

कृषि एवं सहकारिता विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने अपनी पहली ई-बुल्लेटिन जारी की जिसमे विभाग की विभिन्न गतिविधियां, राज्य की पहल, कृषकों के सफलता की कहानियाँ, और ऐसे कई अद्यतन उपलब्ध है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह इस देश के विभिन्न प्रान्तों के कृषकों, विस्तारण अधिकारियों, विकास के विशेषज्ञों, नीतिनिर्माताओं, शोधकर्ताओं, कृषिउद्यमियों और अन्य स्टेकहोल्डरों तक जानकारी के त्वरित प्रसार में मदद करेगा। विभाग की वेबसाइट (www.agricrop.nic.in) में कृषकों, कृषि उद्यमियों और विस्तारण कार्यकर्ताओं की सुविधा के लिए कई पोर्टल जैसे एमकिसान पोर्टल, फार्मर्स पोर्टल, NOWCAST मौसम एसएमएस अलर्ट और फसल बीमा पोर्टल आदि भी जोड़े गए हैं।

अधिक जानकारी http://agricoop.nic.in/imagedefault/e-buletineDAC.pdf से प्राप्त की जा सकती है।

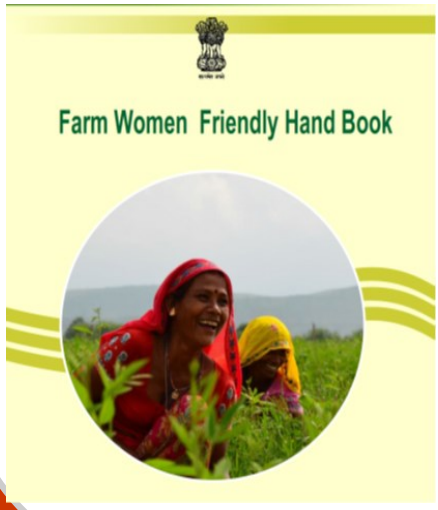


## कृषक महिलाओं के लिए अनुकूल हैंडबुक

कृषि एवं सहकारिता विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय में स्थापित विभाग नेशनक जेंडर रिसोर्स सेंटर इन एग्रिकल्चर (एनजीआरसीए) यह दर्शाने के प्रयास में कि कृषि में उनकी नीतियाँ और कार्यक्रम पूरी तरह से **एंजेण्डेरड** है और महिला सशक्तिकरण की राष्ट्रीय प्रतिबद्धता का प्रचार करती है, यह विभाग के सभी बड़ी पहलों के अंतर्गत 'प्रो-वुमेन इनिशियटिव' नमक हैंडबुक लाने की इच्छुक है। अधिक सूचना http://agricoop.nic.in/imagedefault/extension/ext_rpt.pdf पर उपलब्ध है। www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है। यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबन्धित योजनाओं के ब्यौरों से संबन्धित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों, के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है। यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबन्धित योजनाओं के ब्यौरों से संबन्धित सूचना तथा राज्य सरकारों,

AGRICLINICS & AGRIBUSINESS CENTRES
BETTER FARMING BY EVERY FARMER

**"कृषि उद्यमी"** श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।
कृषि-उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंधन संस्थान (मैनेज),
राजेंद्रनगर, हैदराबाद -500 030, भारत
ई-मेल: agripreneur@manage.gov.in

**मुख्य संपादक :** श्रीमति वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, संपादक : डॉ.पी. चन्द्रशेखर ,सहायक संपादक: डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमति ज्योति सहारे,
**हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली**